संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक १६ ● ०८ मई २०१८ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

वैदिक धर्म के प्रचार द्वारा ही हम महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कर सकते हैं।

डॉ0 धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

आज के लोग कर्म प्रधानता का वैदिक सिद्धान्त त्याग कर जन्म–जाति को बढ़ावा दे रहे थे। वेदों के स्थान पर पुराणों की कथा होती थी। सेवा करने वाले गरीब कमजोर व्यक्तियों को नीच समझकर ठुकराया जाता था। इसी का परिणाम था रोजाना राम, कृष्ण वंशज हजारों की संख्या में ईसाई, मुसलमान बन रहे थे। इस समय विदेश यात्रा करना महापाप समझा जाता था। विधर्मी लोग हमें असभ्य–जंगली, महामूर्ख बताते थे। ईसाई पादरी वेदों को गडरियों के गीत बताते थे। भारतीयों में पाखण्डी लोगों ने यह धारणा बिठा दी थी कि वेदों को शंखासुर नाम का राक्षस पाताल लेकर चला गया है। अर्थात् वेद इस संसार में नहीं हैं।

उस समय धर्म की हालत आटे के दीपक की तरह थी जिसे घर के अन्दर रख दें तो चूहे खा जाए और यदि बाहर रख दें तो कौए लेकर उड़ जाएं। उस समय दलित के छूने पर, किसी के आगे आ जाने पर धर्म नष्ट होना माना जाता था। भारत के राजा लोग अज्ञानतावश आपस में लड़ते रहते थे। विदेशी अंग्रेज शासक हमारी इस फूट का भरपूर लाभ उठा रहे थे। ऐसे भयानक समय में महर्षि देव दयानन्द का इस देव भूमि में प्रादुर्भाव हुआ था। स्वामी जी ने संसार के भले के लिए अपने भरे पूरे परिवार को छोड़ा और जीवन के सभी सुखों को त्याग कर मानवता की सेवा करने का बीड़ा उठाया। महर्षि दयानन्द ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली और योग सीखा। मथुरा में वेदों के प्रकाण्ड पंडित स्वामी विरजानन्द सरस्वती के पास जाकर उनकी सेवा की और वैदिक ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा पूर्ण होने पर दक्षिणा के रूप में गुरूदेव को संसार में ज्ञान का प्रचार करने का वचन दिया, जिसे जीवन भर निभाया।

स्वामी जी ने भारत में घूम–घूमकर वेद प्रचार किया और नर–नारियों को कर्म प्रधानता का महत्व समझाया। उन्होंने ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, अजन्मा, अनादि, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और सर्वेश्वर बताया। मूर्ति पूजा को अज्ञानता का मूल बताकर मूर्ति पूजा से होने वाली हानियों का बोध कराया। उन्होंने नारी जाति और गऊ माता को पूज्य बताया तथा स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। स्वामी जी ने सबसे पहले स्वराज्य का मंत्र भारतवासियों को दिया और विदेशी राज्य महादुखदायी बताया। उन्होंने भारत के सभी राजाओं को मिलकर चलने और अपना एक नेता बनाने के लिए प्रेरित किया। सन् १८७५ ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम महिर्ष दयानन्द महाराज के प्रयासों का ही सुफल था। स्वामी जी ने राव युधिष्ठर से मिलकर सर्व प्रथम रेवाड़ी (हरियाणा) में गौशाला की स्थापना कराई। स्वामी जी यह अच्छी तरह जानते थे कि गौ जैसा उपकारी पशु संसार में कोई नहीं है इसलिए उन्होंने गोकरुणानिधि शास्त्र की रचना करके गौर सेवा को परमधर्म बताया।

स्वामी जी ने भारत के सभी मतों को मानने वाले विद्वानों को समझाया कि

शेष पृष्ठ ८ पर

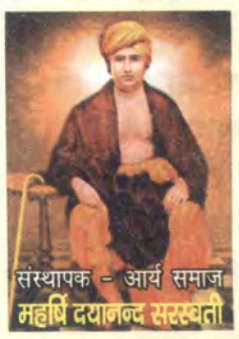
संस्थापक – आर्य समाज
महर्षि दयानन्द सरस्वती

डॉ0 धीरज सिंह आर्य
सभा प्रधान

अरविन्द कुमार
सभा कोषाध्यक्ष

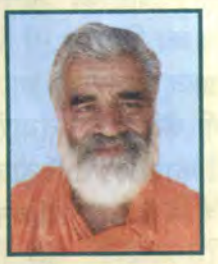
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

आर्य शिवनारायण गुप्ता
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

आर्य समाज भग्गड़वा, बहराइच में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, श्री शिव नारायण आर्य वानप्रस्थ आश्रम का भव्य उद्घाटन समारोह

दिनांक–12 व 13 मई,2018 (शनिवार व रविवार) प्रातः 08–00 बजे से

अध्यक्षता–डॉ0 धीरज सिंह–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

संचालक–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

मुख्य वक्ता–पं0 वीरेन्द्र रत्नम्–उप प्रधान, आ0प्र0सभा उ0प्र0, लखनऊ।

वक्तागण–आचार्य नागेन्द्र कुमार जी –अयोध्या, आचार्य सोमव्रत शास्त्री, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, श्रीमती गिरिजा त्रिपाठी, ओंकारनाथ शास्त्री, सर्वजीत शास्त्री, श्रीमती शशी शर्मा–पूर्व विधायक, हरीश शास्त्री, धर्मेन्द्र शुक्ला जी फैजाबाद, लखनऊ।

निवेदन–समस्त आर्य भाईयों एवं बहिनों से निवेदन है कि इस उद्घाटन समारोह में भारी संख्या में अपनी भागीदारी सुनिश्चत कर समारोह को सफल बनाने की कृपा करें।

–:निवेदक:–

कन्हैयालाल आर्य–प्रधान, जिला सभा बहराइच, जयप्रकाश पटवा–अन्तरंग सदस्य, श्रावस्ती, शिव कुमार कौशल–अन्तरंग सदस्य, गोण्डा, रमेन्द्र देव आर्य–अन्तरंग सदस्य, बहराइच, संजय तिवारी–अन्तरंग सदस्य बलरामपुर, अनिल नैयर–आर्य समाज इकौना, श्रावस्ती, देवाशीष गुप्ता–जिला सभा बहराइच, रमेश कुमार मिश्रा–महासचिव स्वतंत्रता सेनानी संघ, रामकुंवर चौहान–गोंडा।

डॉ0 धीरज सिंह आर्य
सभा प्रधान

अरविन्द कुमार
सभा कोषाध्यक्ष

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

शिक्षा का अधिकार कानून

२००६ में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम पारित किया। तब अन्य विपक्षी दलों के साथ भाजपा ने भी इसका साथ दिया। भला निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का विरोध कौन कर सकता था, पर क्या आप जानते हैं कि शिक्षा अधिकार के नाम पर बने इस अधिनियम से देश भर में हजारों स्कूल बंद हो गए है? ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि आरटीई निजी विद्यालयों की स्वतंत्रता पर आघात करता है। इस अधिनियम के जरिये एक शहरी सोच सब स्कूलों लागू की गई। स्कूल में इतने कमरे होने चाहिए, इस प्रकार का एलेग्राउंड होना चाहिए और उसमें चारों ओर बाड़ इत्यादि होनी चाहिए। शायद यह भूल जाया गया कि हमारे गुरूकुल पेड़ के नीचे भी शिक्षा दे देते थे। उक्त अधिनियम के स्कूल होने के लिए दो शिक्षकों की आवश्यकता तय की गई। यह कोई मुश्किल नियम नहीं लगता, पर यह भी तो हो सकता है कि किसी दूरस्थ इलाके में कोई एक शिक्षक एकल विद्यालय चलाए। आखिर इसमें रोक क्यों? स्कूल के लिए केवल दो आवश्यकताएं हैं–एक शिक्षा और एक शिक्षार्थी। १९३१ में गांधी जी ने अंग्रेजी राज की आलोचना करते हुए कहा था, भारत आज पचास साल पहले से कहीं अधिक अपनपढ़ है। दरअसल जब अंग्रेज शासक भारत आए तो वे वहां की पूरी व्यवस्था बदलने लगे। गांव के स्कूलों में भी उन्होंने अपने नियम जड़ दिए। एक तो अंग्रेजी सोच वाले स्कूल गांवों में नहीं थे और जो थे उन्हें अमान्य कर दिया गया। जो स्कूल यूरोपीय सोच पर आधारित थे वे आम लोगों के लिए बहुत महंगे थे।

आरटीई को उपनिवेशवाद का कहना अनुचित न होगा। पहले तो यह अधिनियम सब स्कूलों को एक ही माप से तौलता है और दूसरे इसका शिक्षा से लेना–देना नहीं नजर आता। आठवीं के बच्चे को आठ साल की शिक्षा के बाद क्या सीखना चाहिए, यह इस अधिनियम में कहीं नहीं है। इसमें कुछ न सीखने पर जोर है। आरटीई के अनुसार कुछ न सीखने पर भी बच्चे को कक्षा में रोका नहीं जा सकता और उसे निकाला भी नहीं जा सकता। न कुछ सीखने की चाह रखने में भी उसे कक्षा में रखना अनिवार्य है। आरटीई अधिनियम की सोच में स्कूल एक चिड़ियाघर समान हैं, जिसमें बच्चों को बाड़ और दीवारों में बंद रखकर आठ साल बाद जंगल में छोड़ दिया जाय, चाहे वह कुछ सीखे या नहीं। कहने को आरटीई शिक्षा का अधिकार है, लेकिन आखिर यह कौन सा अधिकार है जो जबरन लागू किया जा रहा है और जिसमें अभिभावकों के पास कोई विकल्प नहीं? पश्चिमी देशों में जहां शिक्षा की अनिवार्यता है वहां होम–स्कूलिंग यानी घर पर शिक्षण–प्रशिक्षण का विकल्प भी है। आरटीई यह अधिकार भी अभिभावकों से छीन लेता है। आज की शिक्षा का हाल यह है कि बच्चा १२ साल पढ़ाई करने के बाद प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में लग जाता है। १२ साल की शिक्षा के बाद भी वह किसी काम का नहीं होता। अभिभावक बहुत आशा से पैसा खर्च कर उसे कॉलेज भेज देते हैं, लेकिन वहां पढ़ने के बाद भी उसे नौकरी मिलना दुर्लभ होता है।

आरटीई की यह पहल लाभदायक हो सकता है कि निजी स्कूल कुछ प्रतिशत बच्चे गरीब वर्ग से अवश्य लें और उन्हें निःशुल्क शिक्षा दें, लेकिन इसमें दो समस्याएं हैं। पहला तो सरकार ने मान लिया है कि उसके चलाए विद्यालय शिक्षा देने में असमर्थ हैं। हर उन्नत देश में सरकारी स्कूल अच्छे सरकारी स्कूल अच्छे से चल रहे है। यहां तक कि अमेरिका जैसे पूंजीवादी देश में भी ६५ फीसदी बच्चे सरकारी स्कूलों में पएते हैं। वहां सबसे अच्छे स्कूल सरकारी है और एक क्षेत्र के सभी बच्चे इन्हीं स्कूलों में जाते है। चीन में भी करीब सब बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते हैं और अपनी ही भाषा में सभी विषय बढ़ते है। आखिर भारत में ही क्यों निजी स्कलों का चलन और क्यों अभिभावक ऐसे स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना पसंद करते हैं? सरकार अच्छे स्कूल चला पाने की विफलता निजी स्कूलों पर क्यों लाद रही है?

आरटीई में एक सांप्रदायिक समस्या भी है। आरटीई निजी स्कूलों पर बोझ डालता है और जो उसके मानदंड पूरे नहीं करते उन्हें बंद करने का अधिकार सरकार को देता है। शिक्षा अधिकार अधिनियम के दायरे में वे ही स्कूल हैं जिन्हें बहुसंख्यक यानी हिंदू चलाते है। अल्पसंख्यक स्कूलों पर शिक्षा अधिकार अधिनियम लागू नहीं होता। आखिर अल्पसंख्यकों के स्कूल बच्चों के भविष्य निर्माण में हाथ क्यों नही बंटा सकते? ऐसे नियमों से सांप्रदायिक भेद पनपता है। दरअसल आरटीई भी एक कारण जिसके चलते कर्नाटक का लिंगायत समाज खुद को हिंदू समाज से इतर अल्पसंख्यक समाज का दर्जा पाना चाहता है। माना जाता है कि जैन समाजन ने भी इसी कारण खुद को अल्पसंख्यक घोषित कराना उचित समझा ताकि उसके स्कूल सरकारी दखल से मुक्त हो जाए।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः।
रक्षितं वर्द्धयेच्चैव वृद्धं पात्रेषु निःक्षिपेत्।।१।।२।।
अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया।
रक्षितं वर्द्धयेद् वृद्धया वृद्धं दानेन निःक्षिपेत्।।३।।
अमाययैव वर्तेत न कथ्ञ्चन मायया।
बुध्येतारिप्रयुक्तां च मायां नित्यं स्वसंवृतः।।४।।
नास्यं छिद्रं परो विद्याच्छिद्रं विद्यात्परस्य तु।
गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः।।५।।
वकवच्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत्।
वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत्।।६।।
एवं विजयमानस्य येऽस्य स्युः परिपन्थिनः।
तानानयेद् वशं सर्वान् समादिभिरुपक्रमैः।।७।।८।।
तथाध्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति।
तथा रक्षेन्ननृपो राष्ट्रं हन्याच्च परिपन्थिनः।।९।।
मोहाद् राजा स्वराष्ट्रं यः कर्षयत्यनवेक्षया।
सोऽचिराद् भृश्यते राज्याज्जीविताच्च सबान्धवः।।१०।।
शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा।
तथा राजामपि प्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात्।।११।।
राष्ट्रस्य संग्रहे नित्यं विधानमिदमाचरेत्।
सुसंगृहीतराष्ट्रो हि पार्थिवः सुखमेधते।।१२।।
द्वयोस्त्रयाणां पञ्चानां मध्ये गुल्माधिष्ठितम्।
तथा ग्रामशतानां च कुर्य्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम्।।१३।।
ग्रामस्याधिपतिं कुर्य्याद्दशग्रामपतिं तथा।
विंशतीशं शतेशं च सहस्त्रपतिमेव च।।१४।।
ग्रामदोषान्समुत्पत्रान् ग्रामिकः शनकैः स्वयम्।
शंसेद् ग्रामदशेशाय दशेशो विंशतीशिनम्।।१५।।
विंशतीशस्तु तत्सर्वं शतेशाय निवेदयेत्।
शंसेद् ग्रामशतेशस्तु सहस्त्रपतये स्वयम्।।१६
तेषां ग्राम्याणि कार्याणि पृथक्कार्याणि चैव हि।
राजोऽन्यः सचिवः स्निग्धस्तानि पश्येदतन्द्रितः।।१७।।
नगरे नगरे चैकं कुर्यात्सर्वार्थचिन्तकम्।
उच्चैः स्थानं घोररूपं नक्षत्रामिव ग्रहम्।।१८।।
स ताननुपरिक्रामेत्सर्वानेव सदा स्वयम्।
तेषां वृत्तं परिणयेत्सम्यग्राष्ट्रेषु तच्चरैः।।१९।।
राज्ञो हि रक्षाधिकृताः परस्वादायिनः शठाः।
भृत्या भविन्त प्रायेण तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजाः।।२०।।
ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव गृह्णीयुः पापचेतसः।
तेषां सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात्प्रवासनम्।।२१।। मनु०।।

राजा और राजसभा अलब्ध की प्राप्ति की इच्छा, प्राप्त की प्रयत्न से रक्षा करे, रक्षित को बढ़ावे और बढ़े हुए धन को वेदविद्या, धर्म का प्रचार, विद्यार्थी, वेदमार्गोपदेशक तथा असमर्थ अनाथों के पालन में लगावे।।१।।

इस चार प्रकार के पुरूषार्थ के प्रयोजन को जाने। आलस्य छोड़कर इस का भलीभांति नित्य अनुष्ठान करे।।२।। दण्ड से अप्राप्त की प्राप्ति की इच्छा, नित्य देखने से प्राप्त की रक्षा, रक्षित को वृद्धि अर्थात् ब्याजादि से बढ़ावे और बढ़े हुए धन को पूर्वोक्त मार्ग में नित्य व्यय करे।।३।।

कदापि किसी के साथ छल से न वर्ते किन्तु निष्कपट होकर सब से वर्त्ताव रखे और नित्यप्रति अपनी रक्षा कर के शत्रु के किये अुए छल को जान के निवृत्त करे।।४।।

कोई शत्रु अपने छिद्र अर्थात् निर्बलता को न जान सके और स्वयं शत्रु के छिद्रों को जानता रहै, जैसे कछुआ अपने अंङ्गों को गुप्त रखता है वैसे शत्रु के प्रवेश करने के छिद्र को गुप्त रखें।।४।।

कोई शत्रु अपने छिद्र अर्थात् निर्बलता को न जान सके और स्वयं शत्रु के छिद्रों को जानता रहै, जैसे कछुआ अपने अङ्गों को गुप्त रखना है वैसे शत्रु के प्रवेश करने के छिद्र को गुप्त रक्खें।।५।।

जैसे बगुला ध्यानावस्थित होकर मच्छी पकड़ने को ताकता है वैसे अर्थसंग्रह का विचार किया करे, द्रव्यादि पदार्थ और बल की वृद्धि कर शत्रु को जीतने के लिये सिंह के समान पराक्रम करे। चीता के समान छिपकर शत्रुओं को पकड़े और समीप आये बलवान् शत्रुओं से सस्सा के समान दूर भाग जाय और पश्चात् उन को छल से पकड़े।।६।। क्रमशः

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता

– साभार

साम्प्रदायवाद–मतमतान्तर और धर्म इन दोनों शब्दों में बहुत अन्तर है। अंग्रेजी का रिलिजन शब्द भी धर्म की भावना को रूपेणा स्पष्ट नहीं करता अपितु यह शब्द भी ''मत'' का ही पर्यावाची है।

सम्प्रदायवाची मत वही कहलाते हैं जो एकदशीय हों, जो युगयुगान्तर तक विश्व धर्म नहीं बन सकते। इसका सबसे मुख्य कारण यह है इन मतों में शरीर के वाह्य चिन्हों अथवा शरीर द्वारा किए गए वाह्य कर्मों की प्रधानता रहती है। जिन सिद्धान्तों का आत्मा की उन्नति के साथ सम्बन्ध है गौण हैं।

जैसे मुसलमानी धर्म में मुख पर आधी–आधी मूंछ और दाढ़ी रखना, हिन्दुओं (काफिरों) को मारने से स्वर्ग मिलता है, जब तक मुहम्मद साहब में ईमान न लाओ तब तक कोई मुसलमान नहीं बन सकता, एक विशेष ढंग से निमाज़ पढ़ना आदि–आदि कुछ ऐसे बाह्यकर्म हैं जो कभी भी इसे विश्वधर्म बनने नहीं दे सकते। यदि आधी–आधी दाढ़ी–मूछे रखना अथवा चार शादियां करना ही धर्म है तो देवियां कभी भी मुसलमान न बन पायेंगी।

इसी प्रकार ईसाई धर्म में है कि ईसामसीह पर ईमान लाओ तो बस बेड़ा पार समझो। वही हमारे पापों को हर लोग और हम मुक्त हो सकते हैं। मुक्ति को कितना आसान बना दिया, न त्याग की आवश्यकता, न तपस्या का झंझट और न आत्मिक उन्नति के लिए किसी अभ्यास की आवश्यकता। बाईबिल में लिखा है–पूर्व में जाओं और (हीदनज) काफिरों को मारो और ईसाईयत का प्रचार करो। क्या ऐसा धर्म कभी विश्व धर्म बना सकता है? ईसाईयों का खुदा चौथे आसमान पर और मुसलमानों का सातवें पर रहता है। क्या आज कोई व्यक्ति इस प्रकाश के युग में इसकी सत्यता को प्रामाणित कर सकता है? यदि नहीं तो ये मत कभी विश्व धर्म नहीं बन सकते।

सनातन धर्मी भाई ईश्वर को साकार मानते हुए भगवान् राम और श्रीकृष्ण को साक्षात् परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। बस इनकी मूर्ति बनाकर रख लो, उन पर पक्ष–पुष्प और जल चढ़ा दो, पैसे डाल दो या गंगा में डुबकी लगा दो, बस जीवन का आदर्श पूरा हो गया। मनुष्य को बिना कुछ वैराग्य, तप और अभ्यास का कष्ट उठाये मुक्ति मिल जावेगी। इससे मनुष्य कितना निष्कर्मण्य बन सकता है यह आज के युग का प्रत्येक व्यक्ति भली–भांति जान सकता है। क्या संसार के दूर–दूर के कोनों में रहने वाले कभी गंगा में स्नान कर पायेंगे और क्या कभी विश्व के सभी आदमी भगवान् रामकृष्ण की मूर्तियों की पूजा करने लगेंगे। यह आशा दुराशा मात्र ही नहीं अपितु असम्भव भी है। नैपोलियन ने युद्ध के मैदान से असम्भव शब्द को कोष में से निकाल देने का परामर्श दिया था। किन्तु आज विश्व में फैले मतमतान्तरों के विश्व धर्म बनाने के सम्बन्ध में असम्भव शब्द सर्वथा सार्थक प्रतीत होता है, क्या कभी विश्व की देवियां बुर्का पहनना स्वीकार कर लेंगी? यह नितान्त असम्भव है। आज तो पाकिस्तान जैसे कट्टरपन्थी प्रदेश में स्त्रियों ने बुर्के उतार कर फेंक दिए हैं। कई मुस्लिम देशों में बुर्के को सर्वथा तिलांजली दी जा चुकी है।

सिख पन्थ में दसों गुरूओं में विश्वास लाना, गुरूग्रंथ साहब का पाठ और वह भी गुरुमुखी भाषा में, कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें विश्व की जनता कभी स्वीकार न कर सकेगी। यदि लम्बी दाढ़ी–मूंछ रखना ही धर्म है तो देवियां इसे कहा तक पालन कर सकती है? यदि गुरूमुखी में ही गुरूग्रन्थ साहब का पाठ करना है तो क्या कभी युग–युगान्तर तक ऐसा जमाना आ सकता है जब लोग ऐसा कर सकेंगे? ऐसी अवस्था में इस पन्थ को भी एक सम्प्रदाय के लोग ही पूरा कर सकते हैं, सब नहीं।

जैनी लोग मुख पर पट्टी बांधना ही धर्म समझते हैं। जैनी और बौद्ध केवल अहिंसा को ही परम धर्म मान कर चलते हैं। इससे आततायी लोगों को खुली छुट्टी मिल जाती है। चूहों को, सांप बिच्छू तक को मारना पाप है। न तो युद्ध ही बन्द हो सकते हैं और न ही हिंसक जन्तुओं को खुला छोड़ा जा सकता है।

सभी मतमतान्तरों में केवल वाह्य कर्मकाण्ड पर ही अधिक बल दिया गया है। आत्मा अथवा शारीकिर और सामाजिक उन्नति के मूल तत्वों पर कोई विशेष बल नहीं दिया गया और सामाजिक उन्नति के मूल तत्वों पर कोई विशेष बल नहीं दिया गया और अगर उनके सम्बन्ध में कुछ कही संकेत भी है तो वह भी इस ढंग से है जिसे विश्व के सभी आदमी कभी स्वीकार नहीं कर सकते।

वैदिक धर्म की विशेषता यही है कि उसमें बाह्य कर्मकाण्ड को गौण माना गया है जैसे यज्ञ–याग, जप–तप, पूजा–पाठ, यज्ञोपवीत, चोटी आदि सब व्यर्थ है यदि उसके अनुकूल मनुष्य का आचरण नहीं। वैदिक धर्म में करनी और कथनी की एकात्मकता को धर्म माना गया है। पूजा–पाठ करते समय प्रयानुकूल कुछ नियम हैं, जैसे प्रातः पूर्व की ओर सायं पश्चिम को और मुख करके बैठो। यह केलव इस लिए है कि समाज में इस कार्य के लिए एकरूपता रहे। अन्यथा शास्त्र ने खुली छुट्टी दी है ''यथा स्थिरसुखमासनम्'' अर्थात् जिस आसन से मनुष्य सुख से स्थिर बैठकर ईश्वर का ध्यान कर सके वही ठीक आसन कहा गया है।

वैदिक धर्म की आधारशिला धर्म के लक्षण ही है–

धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, प्रकोध। कठिनाई के समय धैर्य रखना, संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। किसी भी मत के मानने वाले हों, सिख हों, मुसलमान हों, ईसाई, जैनी, बौद्ध कोई भी यह नहीं कह सकता कि परीक्षा के समय, युद्ध में अथवा आपत्काल में घबरा जाया करो।

इसी प्रकार ''क्षमा'' अर्थात् सहनशील बनो। दूसरे के कटु बचंनों अथवा तीव्र आलचनाओं को सहन करो। आज प्रजातन्त्र के युग में हम देखते हैं कि नेता लोग विरोधी दलों की तीव्रतम आलोचनाओं को किस प्रकार सहन कर रहे हैं। एक देश दूसरे देश के घ्ज्ञोर से घोरतम अपराधों को भी सहन करता हुआ बातचीत द्वारा समस्याओं को सुलझाने का यत्न कर रहा है।

वह युग निकल गया, जब छोटी–छोटी सी बातों पर दोनों ओर से सेनायें उमड़ पड़ती थी और भूमि खून से लाल हो उठती थी। आज तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति और नेता यही आवाज़ उठा रहा है कि एक–दूसरे की बातों को सहन करो और परस्पर मिलकर प्रत्येक समस्या को सुलझाओ–यही वेद का उपदेश है–

संगच्छब्वम् संवदब्वम् संवो मनांसि जानताम्।

''मिलकर चलो, परस्पर बातचीत द्वारा अपने मनों के विचारों को एक बनाओ।'' यह उपदेश किसी देश व जाति के लिए नहीं वरन् समस्त विश्व के लिए हैं।

दम– का अर्थ अपने मन को वश में करो। उपनिषदों ने मन को इन्द्रिय रूपी घोड़ों की लगाम की उपमा दी है। यदि लगाम ही ढीली हो जावे और घोड़े वश में न रहें तो यात्रियों की क्या दुर्गति होती है यह सभी जानते हैं।

विद्यार्थी अपनी कक्षा में गुरू से पढ़ रहा है। अकस्मात् इसका मन बम्बई के दृश्यों की ओर चला जाता है। बेटो! तुम जानते हो क्या होगा? वह गुरू के समीप बैठा हुआ गुरू से इतनी दूर हो जाता है जितनी बम्बई है। उसे पता ही नहीं चलता गुरू जी क्या पढ़ा गये।

विद्यार्थी, गृहस्थी, संन्यासी, मुसलमान, ईसाई, सनातनी, कम्यूनिस्ट कोई भी हो इस को इस संसार में यदि सुखपूर्व जीना है तो मन को वश में करना ही पड़ेगा। यही विश्व धर्म है।

अस्तेय– मन, वचन, कर्म से चोरी न करना। क्या संसार का कोई व्यक्ति या किसी भी सम्प्रदाय का धर्मशास्त्र चोरी, छल, कपटी का आदेश या उपदेश करता है?

जब विश्व का कोई व्यक्ति विपरीत आवाज नहीं उठा सकता तो आप इसे क्या कहेंगे? क्या यह विश्व का धर्म नहीं?

शौच– शरीर, वस्त्र, घर, मन, बुद्धि सब को शुद्ध रखना। कितने सुन्दर ढंग से शरीर के वास्तविक सौन्दर्य को बढ़ाने का उपदेश दिया गया है। इसमें शरीर के किसी वाह्य चिन्ह पर कोई बल नहीं दिया गया। शुद्धि के संबन्ध में मनु ने कितना सुन्दर लिख है–

अद्भिर्गात्राणि शुष्यन्ति, मनः सत्येन शुष्यति।
विद्यातपोभ्याम् भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुष्यति।।

जल से शरीर पवित्र होता है, सत्य कर्म से मन शुद्ध होता है, विद्या और तप से आत्मा की मैल घुलती है और ज्ञान उपलब्ध करने से बुद्धि निर्मल होती है।

इस शुद्धि में क्या कहीं साम्प्रदायिता की गन्ध पाई जाती है? क्या किसी सम्प्रदाय का व्यक्ति चाहे वह अंग्रेज हैं, जर्मन है, रूसी है या अमरीकन है अथवा भारत के ही किसी कोने में रहने वाला है, इस शुद्धि के विरूद्ध आवाज, उठा सकता है?

इन्द्रिय निग्रह– इन्दियों को वश में न करना विनाश करना है। एक रसना इन्द्रिय को ही ले लीजिये मीठी, चटपटी चीजें बच्चों को व युवक–युवतियों को बहुत अच्छी लगती हैं। यदि मनुष्य स्वयं अपनी रसना को काबू में न करेगा तो अन्त में बाधित होकर रसना इसे वश में कर लेगा और तब डाक्टर कहेगा, खट्टा खाना छोड़ दो, या शक्कर, मीठा खाना बन्द कर दो या तेल में तली चीजें खाना छोड़ दो आदि। तब इन वस्तुओं को छोड़ना ही पड़ेगा। किन्तु उस समय मन को दुःख होगा। प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्रियों को वश में करके भोगों का त्याग करना ही पड़ता है चाहे वह स्वेच्छा से करे या परेच्छा से। स्वेच्छा से त्याग करने में सुख है और परेच्छा से अर्थात् डाक्टर के कहने से त्याग करते समय दुःख होता है।

धी, विद्या, सत्य और अक्रोध इनमें से कौन सी ऐसी चीज है जिसे कोई भी संप्रदायवादी झुठला सकता है? अकल मार्ग पर चलाओ। चोर, बनावटी दवाइयां बनाने वाले, मिलावट करने वाले सभी बड़े पढ़े–लिखे और बुद्धिमान लोग होते हैं परन्तु कोई सम्प्रदाय ऐसी अकल की याचना नहीं करता। धी का अर्थ अर्थ है बुद्धि। ऊपर हम लिख आये हैं– बुद्धिर्ज्ञानेन शुष्यति, अकल सत्य ज्ञान से ही सन्मार्ग पर चल सकती है। विद्या और ज्ञान एक ही बात है। प्रातः बुद्धि को सन्मार्ग पर चलाने के लिए सत्य ज्ञान परमावश्यक है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। सत्याचारण एक सर्वव्यापक धर्म है। कोई सम्प्रदाय झूठ आचरण करने का प्रचार नहीं करता। इसी प्रकार अक्रोध है। गीता में कहा है कि क्रोध से अकल मारी जाती है और मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है।

क्रोधात् भवति संमोहः, संमोहात् स्मृति–विभ्रमः।
स्मृतिभृं शाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशत् प्रणाश्यति।।

वैदिक धर्म की आधार शिला यही १० धर्म के लक्षण हैं जो सार्वभौम हैं। इसी कारण यह सर्वथा असाम्प्रदायिक हैं। इसी से मनुष्य जीवन के आदर्श को प्राप्त कर सकता है और मनुष्यों से बने विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।

वेद कहता है–

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

संसार का प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे को मित्र की आँख से देखे। इससे बढ़कर साम्प्रदायिकता का और कोई प्रणाम नहीं हो सकता।

विश्वव्यापी सभी समस्याओं का समाधान
वैदिक विद्याविधानः महर्षि देव दयानन्द का विज्ञापन

(उदयनाचार्य, निगम–नीडम्, (वेदगुरुकुल, पिडिचेड, गज्वेल, मेदंक (आ0प्र0) 502278)

इस जगत् में मनुष्य सर्वोत्तम प्राणी के रूप में जन्मा है। पर इसका ज्ञान स्वाभाविक न होकर, नैमित्तिक है अर्थात् उसे माता, पिता गुरू आदि से ही ज्ञान प्राप्त होता है, अन्यथा वह पशु–पक्षियों से भी निम्न प्राणी सिद्ध होता है। अतः मनुष्य को ज्ञान विद्या, कतादि की अत्यन्त आवश्यकता होती है। मनुष्य को मनुष्यश्रेणी में स्थापित करने वाला प्रमुख साधन ही विद्या व ज्ञान कहलाता है। महर्षि दयानन्द ने भी कहा है कि "जिससे विद्या, सभ्यता धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसको शिक्षा कहते हैं" (स्वमन्तव्या०)। "जिससे ईश्वर से लेके पृथिवीपर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है" (आर्योद्देश्य०) पर सम्प्रति प्रचलित विद्याविधान से तो विपरीत दुष्परिणाम ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इस आधुनिक विद्या में सहृदयता रहित मनुष्य रूपी यन्त्रों के निर्माण की शक्ति अवश्य है, पर वह मानवीय संस्कारोपेत मनुष्य के निर्माण में सर्वथा असमर्थ सिद्ध हुआ है। वैयक्तिक जीवन से लेकर देश एवं विश्वभर के क्षेत्रों में सर्वत्र स्वार्थ, अनाचार, अत्याचार, अधर्म, अन्याय, अवनीति, अकर्मण्यता, विषयलोलुपता, दुराचार, भ्रष्टाचार, जातिवाद आदि से वीभत्य दुःस्थिति बनी हुए है। माता–पिता, अध्यापक और विद्यार्थी सभी लोग आधुनिक विद्या से केवल धन की आशा करते हैं। उसके लिए सभी अपने–अपने मनो–अश्वों का चहुं दिशाओं में दोड़ाते हैं। पर आज का मनुष्य यह समझ नहीं पा रहा है कि धनादि ऐश्वर्य अपने साध्य नहीं हैं, न ही वे शाश्वत सम्पत्ति हैं। आदर्श एवं संस्कारादि विहीन आधुनिक शिक्षा से मनुष्य पथभ्रष्ट होकर होकर नरपिशाच बनता जा रहा है। तत्परिणामतः रक्षक ही भक्षक के रूप में, प्राणदाता (डाक्टर) प्राणान्तक के रूप में, अध्यापक अनाचारी के रूप में, विद्यार्थी अविनीत के रूप में, नागरिक अनागरिक के रूप में परिणत् होते जा रहे हैं।

आक्रामक अंग्रेजों की कुटिलनीति के कारण ही वेद और ऋषि, मुनि आदि महापुरूषों से विभूषित एवं सर्व–विधसुखशान्तियों से सम्पन्न विश्वगुरू भारत आज अत्यधिक विषम एवं विपत्कर परिस्थितियों से आक्रान्त है। परिणामों पर विचार किए बिना किया गया कार्य सर्वथा निष्फल और दुष्फल होता है, इसके लिए यह एक बहुत बड़ा उदाहरण है। अब भी भारतीय सचेत होकर धर्म, मानवता, विश्वभ्रातृत्व, संस्कृति, सभ्यता आदि को विनष्ट करने वाले इन भयानक विषम परिस्थितियों का समूल विनाश करने के लिए वेदों की ओर लौटें और सनातन वैदिक संस्कृति तथा पुरातन आर्षपरम्परा के अनुकूल विद्याविधान को अपनायें, जिससे इस देश का पूर्व दिव्य वैभव पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

गुरूकुल–विद्यविधान की विशेषता और महत्व "सा विद्या या विमुक्तये"– जिससे समस्त दुःख समाप्त होकर शाश्वत सुख–शान्ति की प्राप्ति होती है, वही विद्या कहलाती है। यह अलौकिक वेदविद्या केवल गुरूकुलों में ही दी जाती है।

"मनुर्भव, देवो भव, ऋषिर्भव"–दया, प्रेम आदि मानवताधर्म से युक्त मनुष्य का निर्माण करना गुरूकुल–विद्या की विशेषता है। जिससे एक दिव्य मानव का भी निर्माण होता है– "अथ ये ब्राह्मणाः (ब्रह्मजिज्ञासवः) शुश्रुवांसोऽनूचानास्ते मनुष्यदेवः" (श. ब्रा. २.४.१४) और गुरूकुलीय विद्या से आत्मविद् योगी, ऋषि, मुनि भी बन सकते हैं। वेदविद्या के अध्ययन से प्राप्त प्रयोजनों का वर्णन करते हुए ऋग्वेद स्वयं कहता है कि–

"अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्" (ऋ.१०.१२५.५)।

यहाँ स्पष्ट रूप से कहा गया है कि देव और मनुष्यों द्वारा सेवित वेद के पढ़ने से मनुष्य ब्रह्मतेजोयुक्त, चतुर्वेदविद्याविभूषित, सुमेधासम्पन्न ऋषित्वादिदिव्यगुणापन्न बन जाता है।

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव" –गुरूकुलीय विद्या का अधीत विद्यार्थी माता, पिता और गुरू के महदुपकारों को पहचान कर जीवनभर उनके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होता है एवं उनके उपदेशों और आदेशों का अनुकरण करता हुआ उनके सदृश दिव्यगुणान्वित होता है। "सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम्, सत्यान्न प्रमदितव्यम्, धर्मान्न प्रमदितव्यम्, श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया देयम्, प्रिया देयम्, भिया देयम्" (तै० उप० ७.११.१–४) सत्य ही बोलो, धर्म का ही आचरण करो, प्रमादरहित होकर निरन्तर वेदादि सत्याशास्त्रों का स्वाध्याय एवं प्रवचनों का अनुष्ठान करो, किसी भी परिस्थिति में दान की प्रवृत्ति का त्याग मत करो इत्यादि धार्मिक, नैतिक और आत्मिक संस्कारों से गुरूकुलीय विद्यार्थी संस्कारित होता है। सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् (ऋ. १०.१६१.२) परस्पर का व्यवहार, संवाद, मनोविचार आदि सभी का एक हो। इस प्रकार के आदर्श व्यवहारों से गुरूकुलीय विद्यार्थी प्रशिक्षित होते हैं।

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।
(अथर्व, ८.४.२२)

अज्ञान, मोह, राग–द्वेष, मात्सर्य, काम, इन्द्रियदौर्बल्य, अहंकार लोभ आदि आसुरीभावों को विनष्ट कर यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह), नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्राणिधान) आदि दैवीभाव विद्यार्थियों को हृदयंगम कराये जाते हैं।

अयं निजः इयं परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
(शार्ङ्गधरपद्धति २७३)

अपना–पराया, मेरा–तेरा आदि स्वार्थ की भावनायें अल्पबुद्धि वालों में ही उत्पन्न होती हैं। उदार व्यक्ति और ज्ञानी तो सम्पूर्ण विश्व के प्रति अपने की भावना रखता है। इत्यादि नीतिवाक्य गुरूकुलीय विद्यार्थियों के मनों में अंकुरार्पित किये जाते हैं।

"सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्" (मनु० ५.१०६) धर्मनुसार धनाद्यैश्वर्यों को प्राप्त करना ही सभी पवित्रताओं में सर्वोत्तम पवित्रता है।

"अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलनम्रताम्। अनुसृत्य सतां मार्गं यत् स्वल्पमपि तद् बहु" (शार्ङ्गधरपद्धति ३०७)।।

दूसरों को दुःख दिये बिना, दुष्टों की खुशामद के बिना, सन्मार्ग पर चलते हुए धर्मपूर्वक अर्जित थोड़ा भी धन बहुत हो जाता है, सुखदायक हो जाता है। इस प्रकार के पवित्र विचारों से, अपरिग्रहत्व व कुम्भीधिन्यत्व से वेद का विद्यार्थी प्रबुद्ध किया जाता है। आर्षग्रन्थों के अध्ययन से होने वाले एक प्रमुख प्रयोजन का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं– "महर्षि लोगों का आशय जहां तक हो सके वहां तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है। क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने, वहाँ तक कठिन रचना करनी। जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सके। जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों का पाना"– (सत्यार्थ० तृ.० समु०)।

आधुनिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को बहुत से ऐसे विषय पढ़ाये जाते हैं, जो उनके जीवन में कभी भी, किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकार से उपयोग में नहीं आ सकते। यह सब केवल विद्यार्थियों का भार मात्र है। पर गुरूकुलों की आर्षपद्धति में अनावश्यक व निरर्थक विषय कभी भी नहीं पढ़ाये जाते। अध्यापित प्रत्येक विषय विद्यार्थी के जीवन में एक अमूल्य ज्ञाननिधि एवं परम उपयोगी ही सिद्ध होता है।

अधुनातन विद्यालयों में अंग्रेजों के द्वारा प्रकल्पित तथा आधारहीन मिथ्या इतिहास पढ़ाया जाता है। इतना ही नहीं आक्रामकों के दुश्चरित्र को पढ़ाकर विद्यार्थियों का मनोबल गिराया जाता है। पर गुरूकुलों में यथार्थ इतिहास, ऋषि, मुनि, महापुरूषों का आदर्श चरित्र और भारत देश की आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिये हुए महान् योद्धाओं का चरित्र पढ़ाया जाता है। जिससे गुरूकुलीय विद्यार्थी परम देशभक्त बन जाते हैं।

"समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि" (अथर्व ३.३०.६)– गुरूकुलों में जात्यादि भेद के बिना धनवानों एवं निर्धनों के बालकों को सबको समान नियम, रहन–सहन, वेषभूषा, भोजन अध्ययन, अध्यापन, यजन–याजन आदि का अधिकार रहता है। गुरूकुलों में स्वास्थ्यप्रद एवं पुष्टिदायक, सात्मिक भोजन ही दिया जात है और वैदिक संस्कृति तथा भारतीय सभ्यता के अनुकूल वेष–भूषा, भाषा, आचार–विचार ही व्यवहत होते हैं।

गुरूकुलीय विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक, आत्मिक बल प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे वे स्वस्थ, क्रियाशील और मेधावी हो जाते हैं। अनेकों विषम–परिस्थितियों एवं विघ्नों के उपस्थित होने पर भी धैर्य से उनका समाना करते हुए अग्रसर होते हैं, पर कभी भी आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध वे नहीं करते। इतना ही नहीं वे अर्थादि साधनों के अभाव में भी केवल मानसिक संकल्पशक्ति के द्वारा अनेकों महत्कार्यों को सिद्ध करने का सामर्थ्य रखते हैं।

नियमित दिनचर्या, गुरूकुलसेवा, अतिथिसेवा आदि के द्वारा विद्यार्थी विनम्र एवं निराभिमानी बन जाते हैं। गुरूकुलों में विद्याबोध के साथ अध्यापन का प्रशिक्षण व्यवस्था–प्रबन्धन नेतृत्व, वक्तृत्व, लेखन आदि कलाओं का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

आर्षविद्या के अध्ययन से आत्माभ्युदय, मोक्षसम्प्राप्ति के साथ देशसमृद्धि, सामाजिक सुख–शान्ति भी सिद्ध होती हैं। गुरूकुलों में धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक प्रशिक्षण अनिवार्य होता है। सहशिक्षा विवर्जित है। आसन, प्राणायाम, व्यायाम, ध्यान, सन्ध्या, अग्निहोत्र आदि दैनिक अनिवार्य नित्यकर्मों के प्रमुख अंग होते हैं। गुरू के साथ शिष्य का सम्बन्ध माता–पिता के सम्बन्ध के सदृश ही होता है। गुरूकुल का प्रशिक्षण व्यापारदृष्ट्या धनार्जन के लिए नहीं होता अपितु इहलौकिक, पारलौकिक सुखों को प्राप्त कराने के लिए होता है। आचारवान् आचार्यों के द्वारा आदर्शभूत आचरण का अभ्यास कराया जाता है।

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

विश्वव्यापी सभी समस्याओं का समाधान...

विद्यार्थियों के विद्या का बोध सरल, सहज और सुबोध पद्धति से कराया जाता है। जिससे वे उन्नत श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाते हैं। अधीत सभी विषयों की परीक्षायें ली जातीं हैं। अध्यापन संस्कृत ओर हिन्दी आदि मातृभाषाओं में होता है। अंग्रेजी कम्प्यूटर आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। सत्यासत्य, धर्माधर्म, उचितानुचित, विश्वसनीयाविश्वसनीय, वैदिकावैदिक, ईश्वरानीश्वर, आत्मानात्मा, ज्ञानाज्ञान आदि अनेकों विषयों के परिज्ञान से विद्यार्थियों का विवेक विकसित किया जाता है।

प्राथमिक प्रशिक्षण में शुद्ध उच्चारण, सुलेख, संस्कृभाषा का प्रवेश, सस्वर वेदपाठ, माता–पिता, गुरू, अतिथि, विद्वान्, बन्धुमित्र आदि के साथ करणीय यथायोग्य व्यवहार जैसे मधुरभाषण, आदर–सत्कार, आचार अनाचार, श्रद्धास–भक्ति आदि का अभ्यास कराया जाता है।

गुरूकुल और महर्षि दयानन्द सरस्वती–

मैकाले के विद्याविधान के कारण भारतीयों में एक ऐसी हीनदृष्टि उत्पन्न हो गयी कि–पाश्चात्य सभ्यता, विद्या, चिकित्सा, चरित्र ही महान् है, पर वेद, वैदिक परम्परा संस्कृति, धार्मिकता, मानवता, देशभक्ति, स्वभाषा, नैतिकता आदि महान् नहीं हैं, ये सब असभ्यता के द्योतक हैं। यह इस देश का बहुतत बड़ा दुर्भाग्य है। इतना ही नहीं वेदमाता और भारतमाता के सभी मानवमात्र अपने वैभवोपेत अतीत से, दैवीभाषा संस्कृत से, मानवमात्र के लिए कल्याणप्रद वैदिक संस्कृति से और ऋषि–मुनियों की प्राचीन परम्परा से सर्वथा विपरीत दिशा में बहते जा रहे हैं। आज डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, अधिकारी, नेता आदि बनना सरल है, पर मानव बनना असम्भव जैसा हो गया है। इस शोचनीय विषम परिस्थिति का समाधान केवल वैदिक मार्ग में ही हे। अतएव महर्षि देव दयानन्द ने कहा था कि– ''हे मनुष्यों! वेदों की ओर लौटो।'' केवल कहना ही नहीं, अपितु, उन्होंने वैदिकमार्ग को प्रशस्त करने के लिए चार वेद गुरूकुलों की स्थापना भी की थी। पर उस समय वदे और वेदानुकूल ग्रन्थों को ही प्रमाणिक मानने वालों में महर्षि दयानन्द अकेले ही थे। वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल कोई अध्यापक व आचार्य के न मिलने के कारण और जो मिले भी थे, वे स्वामी जी के वैदिक नियमों में कटिबद्ध न होने के कारण गुरूकुलों को निरस्त करना पड़ा। पुनरपि स्वामी जी का यह प्रयत्न प्रशंसनीय ही नहीं, अपितु अभूतपूर्व है। क्योंकि वे स्वयं वैदिक धर्मके प्रचारार्थ प्रवचन, शास्त्रार्थ, उत्तर–प्रत्युत्तर, शंका–समाधान, वेदभाष्यादि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन, गोरक्षण आदि बृहद् कार्यों को एकसाथ करते हुए वैदिक आर्ष परम्परा की रक्षाके लिए गुरूकुलों को स्थापित करना, अध्यापकादियों के वेतन का और गुरूकुल की व्यवस्था के लिए आर्थिक प्रबन्ध करना कोई सामन्य विषय नहीं है। इतना ही नहीं उस समय यह भारत अंग्रेजों के आधीन था। वे अपने विद्याविधान को भारत में प्रवेश कराने में चारों ओर पूरे प्रयत्नशील थे और वेद गड़रियों, जंगलियों के गीत हैं, संस्कृतभाषा मृत भाषा है इत्यादि अपप्रचार के षड्यन्त्र भी चल रहे थे। स्वामी जी के सामने उस समय यह भी विषम परिस्थति थी कि येन–केन–प्रकारेण आर्षग्रन्थों को पढ़ाने वाले विद्वानों की व्यवस्थाक करने पर पर भी उन ग्रन्थों को पढ़ने वाले कोई छात्र उत्साह से सामने नहीं आते थे। क्योंकि उस समय के सभी छात्र सिद्धान्तकौमुदी, पुराण आदि अनार्ष ग्रन्थों को पढ़ने में ही रूचि रखते थे। और उस समय के जनमानस में यह भ्रम उत्पन्न किया गया था कि ब्राह्मणेतर लोगों को एवं स्त्रियों को वेदादि शास्त्र और संस्कृतभाषा पढ़नी नहीं चाहिए, पढ़ने से पाप लगता है इत्यादि।

पाठ्यग्रन्थों का उपलब्ध होना उस समय अत्यन्त दुर्लभ ही था। इस प्रकार की अनेकों विषम परिस्थितियों में विविध कार्यों में संलग्न रहते हुए भी आर्ष परम्परा की रक्षा के लिए महर्षि के द्वारा प्रयत्न किया जाना किसी महान् उद्देश्य की ओर संकेत हैं। उनके मस्तिष्क में आगे जानें–

महर्षि देव दयानन्द का विज्ञापन– इससे मेरा यह विज्ञापन है आर्यावर्त देश का राजा अंग्रेज बहादुर से कि संस्कृतविद्या की ऋषि मुनियों की रीति से प्रवृत्ति करावें। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख लाभ होगा और जितने आर्यावर्त वासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा कहना कि इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें, ऋषि–मुनियों की रीति से अत्यन्त आनन्द होगा और जो संस्कृत विद्यालुप्त हो जाएगी, तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी इसमें कुछ सन्देह नहीं।

सो यह ठीक–ठीक निश्चय हृदय में भया कि वेद और सनातन ऋषि–मुनियों का शास्त्र सत्य है, क्योंकि इनमें कोई असम्भव वा युक्त कथा नहीं है। जो कुछ है उन शास्त्रों में सत्य पदार्थ विद्या और सब मनुष्यों के वास्ते हितोपदेश है। और इनके पढ़े बिना मनुष्य को सत्य–सत्य ज्ञान कभी न होगा। इसलिए इनका अवश्य सब मनुष्यों को पढ़ना चाहिए। और जिन (ग्रन्थों) को (सत्यार्थ प्रकाश आदि में) दूर छोड़ने को कहा कि इनका न पढ़ें, पढ़ावें न इनको देखें। क्योंकि इनका देखने से वा सुनने से मनुष्य की बुद्धि बिगड़ जाती है। इसलिए इन ग्रन्थों को संसार में रहने भी न दें, तो बहुत उपकार होगा।

विशेष करके आर्यावर्तवासी मनुष्य जब तक सनातन संस्कृत विद्या न पढ़ेंगे, सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग, पर परमेश्वर की उपासना न करेंगे, परस्पर विद्याग्रहण और श्रेष्ठ–व्यवहारों को न करेंगे, परस्पर हित और उपकार न करेंगे, पाषाणादिकमूत्तिपूजन, हठ, दुराग्रह, आलस्य, अत्यन्त विषयसेवा, खुशामदी धूर्तपुरूषों का संग, मिथ्याविद्या और दुष्ञ व्यवहारों को न छोडेंगे, मिथ्या धननाश और बाल्यावस्था में विवाह के त्याग, ब्रह्मचर्याश्रम से शरीर और विद्याग्रहण जब तक न करेंगे और शरीर, बुद्धि विद्या धर्मादिकों की रक्षा और उन्नति न करेंगे, तब तक इनको सुखलाभ होना बहुत कठिन है।

आर्यावर्त देश पर मुझ को बहुत पश्चाताप है, क्योंकि इस देश में प्रथम बहुत सुखों और विद्याओं की उन्नति थी। बहुत ऋषि–मुनि, बड़े–बड़े विद्वान् इस देश में भरे थे, जिनके अच्छे–अच्छे काम और अच्छे विद्यापुस्तक अब तक चली आते हैं। और अच्छे–अच्छे राजधर्म के चलाने वाले राजा भी हुए हैं, जिन्होंने कभी पक्षपात का कोई कार्य नहीं किया, किन्तु सदा धर्म न्याय में ही प्रवृत्त भये हैं। सो देश इस वक्त ऐसा बिगड़ा है कि इतना बिगाड़ कोई देश में देखने में नहीं आता है। सो हमारी प्रार्थना तब आर्यवर्तवासी राजा और प्रजा से है कि उक्त बुरे कर्मों को छोड़के अच्छे कर्मों में प्रवृत्त होवें ओर जो कोई अन्यर्देशीय राजा आर्यावर्त में हैं, उससे भी मेरी प्रार्थना यह है कि इस देश में सनातन ऋषि मुनियों के किए उक्त ग्रन्थ और ऋषि–मुनियों द्वारा की गई वेदों की संख्या, उसी रीति से वेदों का यथावत् अर्थज्ञान और उनमें उक्त जो व्यवहारों के नियम, उनकी प्रवृत्ति यथावत् करावें। इसी से ही यह देश सुधरेगा, अन्यथा नहीं। और भी यह है–सत्यविद्या और सत्य व्यवहार सब देशों में प्रवृत्त होना चाहिए। परन्तु आर्यावर्त देश की स्वाभाविक सनातन विद्या संस्कृत ही है, जो कि उक्त प्रकार से प्रथम कही, उसी से इस देश का कल्याण होगा, अन्य देशभाषा से नहीं। अन्य देशभाषा तो जितना प्रयोजन, उतनी ही पढ़नी चाहिए। और विद्यास्थान में संस्कृत ही रखना चाहिए। सो मैं परमेश्वर से अत्यन्त प्रार्थना करता हूँ कि हे परमेश्वर, हे सच्चिदानन्द अनन्तस्वरूप, हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्त स्वभाव, हे न्यायकारिन्, हे सर्वशक्तिमन्, हे अज, हे अन्तर्यामिन्, हे सर्वजगदुत्पादक, हे सर्वजगदुद्धारक, हे करूणानिधे! सब जगत् के ऊपर ऐसी कृपा करें जिससे कि सम्मपूर्णविद्या का लाभ वेदादिक सत्यशास्त्रों को ऋषि मुनयों मुनियों की रीति से हो।

(ऋ.द.स. के पत्र–विज्ञापन–६ पूर्ण, ११)

मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि देश में सभ्यता का सूर्य चमके और वेदों का सत्यज्ञान फैले तो अज्ञानी भारत का अन्धकार जिसने जनता को ऐसी अधोगति में डाल दिया है, एक दिन अवश्य दूर हो जायेगा।

(ऋ.द.स. के पत्र–विज्ञापन –२६ पूर्ण ४६)

वेद और प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के ज्ञान के बिना किसी को संस्कृत विद्या का यथार्थ फल नहीं हो सकता। और इसके बिना मनुष्य जन्म का सफल होना दुर्घम है।

(ऋ.द.स.) के पत्र–विज्ञापन–१८ पूर्ण, ८६)।

अथर्ववेद में अल्लोपनिषद् करके डाल दिया है। मतलबी पण्डित लोगों ने नये–नये श्लोक बनवाकर लोगों के मनों में भ्रम डाल दिया है, यह बड़े ही दुःख की बात है। इसलिए ऐसा हो कि स्थान–स्थान पर वेदशालायें लिवायी जावें अर्थात् वेदाध्ययन को हर प्रकार से उत्तेजना मिले, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। (पूना प्रवचन, तृतीय दिन)।

हमारे भरतखण्ड देश से वेदों का बहुत–सा धर्म लुप्त हो गया है और रहा–सहा हम लोगों के प्रमाद से नष्ट होता जा रहा है और उसकी जगह पाखण्ड, अनाचार और दम्भ बढ़ता जा रहा है। सदाचार और सच्चाई से हम लोग दूर होते जा रहे हैं, तभी तो हम सबकी दुर्दशा हो रही है, इसमें आश्चर्य ही क्या है? सनातन आर्ष ग्रन्थ वेदादि छोड़कर पुराणों में लिपट रहे हैं और उनकी कल्पित और असम्भव गाथाओं को अपना धर्म समझ रहे हैं। यदि मुझसे कोई पूछे कि इस पागलपन का कोई उपाय भी है या नहीं? तो मेरा उत्तर यह है कि यद्यपि रोग बहुत बढ़ा हुआ है, तथापि इसका उपाय हो सकता है। यदि परमात्मा की कृपा हुई तो असाध्य नहीं है। वेद और ६ दर्शनों की सी प्राचीन पुस्तकों के भिन्न–भिन्न भाषाओं में अनुवाद करके सब लोगों को पढ़ाए जावें जिससे अनायास प्राचीन विद्याओं का ज्ञान प्राप्त हो सके, ऐसा यतन करना चाहिए और पढ़े–लिखे विद्वान् लोगों को सच्चा धर्म का उपदेश करने की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए (पूना प्रवचन, १८वाँ प्रवचन)।

प्रत्येक सभासदों को न्यायपूर्वक पुरूषार्थ से जितना धन प्राप्त हो, उसमें से आर्यसमाज, आर्यविद्यालय गुरूकुल तथा आर्यप्रकाश पत्र, इन तीनों के प्रचार के लिए प्रीतिपूर्वक शतांश देवं। अधिक देने से अधिक धर्मफल। इस धन का व्यय इन तीन विषयों में ही हो, अन्यत्र व्यय नहीं किया जाय। (ऋ.द. स. के पत्र और विज्ञापन, भाग–२ पृ०६११)।

जब तक कन्या, पुत्र आठ वर्ष्ज के हों, तब तक माता–पिता उनको अच्छी शिक्षा देवें। इस के पीछे ब्रह्मचर्य धारण करा के विद्या पढ़ने के लिए अपने घर से बहुत दूर आप्त विद्वान् पुरूषों और आप्त विदुषी स्त्रियों की पाठशालाओं में भेज देवें। यहां पाठशाला में जितने धन का खर्च करना उचित हो, उतना करें। क्योंकि संतानों को विद्यादान के बिना कोई उपकार व धर्म नहीं बन सकता। इसलिए इस का निरन्तर अनुष्ठान किया करें। (यजुर्वेदभाष्य ११.५८)।

सर्वान् परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः

(मनु० ४.१७)

वेदाध्ययन और वैदिक परम्परा के बाधक ध्नाद्यैश्वर्यों

नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्

डॉ–विजेन्द्र पाल सिंह, चन्द्र लोक कालोनी खुरजा

यदि वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो उस वृक्ष पर पुष्प फल ही नहीं लगेंगे यही स्थिति आज हमारे राष्ट्र भारत की है जिसका मूल था वैदिक व्यवस्था लाखों वर्षों से हमारे पूर्वज वैदिक धर्म पर चलते आए ' प्राण चले जायं पर वेद विरूद्ध नहीं चलते थे इसी का तो भाव था प्राण जाये पर वचन न जाय। वचन भी सत्य व निष्पक्ष होते थे जो मन में हो वाणी में होता था मन व हृदय वैदिक ज्ञान व आचरण से परिपूर्ण रहते थे।

महाभारत युद्ध से कुछ पूर्व से जब वैदिक ज्ञान का लोप होने लगा पश्चात् विदेशियों के आक्रमण हुए मुगलों तुर्क पठानों ने देश को खूब लूटा मतान्तरण कराए पश्चात अंग्रेजी शासन में भारत की धरती को खूब रौंदा।

सहस्रों वर्षों की लड़ाई के बाद भारत की भूमि स्वतन्त्र हुई प्रत्येक को प्रसन्नता हुई सन् १९४६ के बाद भारतीय झूम उठे संविधान बना देश की बागडोर अंग्रेजों से भारतीयों के हाथ आ गयी। स्वतन्त्रता तो मिली परन्तु हम अपने राष्ट्र में जो हमारा मूल था उसकी ओर हमारा ध्यान नहीं गया इसी कारण आज भारत की प्रजा दुःखी है। दिग्भ्रमित है अपराध भष्टाचार गुरूडमवाद, साम्प्रदायिक दंगे जातिगत भेद–भाव रुक नहीं रहे हैं आज भी हम एक नहीं हैं संगठित नहीं हैं हमारे मन विचार एक नहीं हैं क्योंकि सत्ता पाने के लिए हम आजाद हुए नहीं विभाजित हो गए धरती (भारत) पर तीन पाकिस्तान बना दिए हैदराबाद पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान। जब धर्म के आधार पर पाकिस्तान बना तब भारत को भी आर्य राष्ट्र घोषित करना चाहिए था जो नहीं हुआ और आज के भारत में हमें–

संस्कृत भाषा को महत्व देना चाहिए था क्योंकि संस्कृत हमारे पूर्वजों की भाषा रही थी समस्त भाषाएं संस्कृत में ही बनी हैं।

हमारी संस्कृति का मूल वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, रामायण महाभारत, गीता व समस्त प्राचीन साहित्य में संस्कृत भाषा में ही था साहित्यों में ज्ञान विज्ञान था हमारा गौरव था विदेशी हमारी पाण्डुलिपियों व शास्त्रों को लूट कर ले गए। मतान्तरण कराए गए हीरे जवाहरात आभूषण हाथी घोड़ों पर लाद कर विदेश ले गए वीभत्स अत्याचार यहां की प्रजा पर किया गया।

किसी व्यक्ति या देश का गौरव मिटाना हो तो वहां उनका इतिहास मिटा दिया जाय, वहां की संस्कृति, वहां की भाषा को मिटा दिया जाय और प्रजा के हृदय में उनकी संस्कृति से घृणा पैदा कर अन्ध विश्वास और पाखण्ड भर दिया जायें देश स्वयं मिट जायेगा। यही विदेशियों ने किया।

हमने मैकाले को महत्व दिया उसने कहा था भारत से हम अंग्रेज चले जाएंगे परन्तु ऐसा कर जायेंगे कि इस धरती पर ही काले अंग्रेज पैदा होने लगेंगे फल स्वरूप आज अंग्रेजी को महत्व दिया जा रहा है संस्कृत के विद्यालयों में ताले लगते जा रहे हैं। भारत सरकार की सेवाओं हेतु अंग्रेजी की परीक्षा तो अनिवार्य है परन्तु संस्कृत नहीं। यही मैकाले की चाल थी सो पूरी हो रही है।

गुरूकुल हमारी वैदिक शिक्षा के स्रोत थे विदेशियों ने गुरूकुल आश्रम नष्ट कर दिए उन्हें पता था कि यही शिक्षा व संस्कृति के स्रोत हैं यह नहीं रहेंगे तो भारतीयों की शिक्षा व संस्कृति तो नष्ट हो ही जायेगी तब अंग्रेजी व अंग्रेजियत फले फूलेंगी वही हो रहा है। यदि आज भी हम वैदिक शिक्षा आरम्भ कर दें और भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक किया जाय तो शिक्षा से लोगों में मानवता की भावना व राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ेगी संस्कृत न वेद शिक्षा समस्त विश्व की भलाई हेतु है किसी देश जाति विशेष की नहीं है।

संस्कृत आचरण की शिक्षा है आज जो दुराचार, यौनाचार, बुराइयां अपराध बढ़ रहे हैं आचरण की शिक्षा न होने से ही हो रहे हैं क्रान्तिकारियों ने रामराज का स्पप्न देखा था वह नहीं हो पा रहा है अपितु उल्टा हो रहा है रिश्वत खोरी भ्रष्टाचार की भावना अधिकांश लोगों में है जब राजा ही दुराचारी भ्रष्टाचारी होंगे तो जनता की तो बात ही क्या? यही कारण है चारों ओर घोटाले भ्रष्टाचार करने वाले सिर उठा रहे हैं गलत कार्य कर भी उन्हें लज्जा नहीं आती। क्रान्तिकारियों का इतिहास तक नहीं पढ़ाया जाता।

आज हमें शिक्षा में वैदिक व्यवस्था की ओर चलना होगा वेदों की ओर लौटना होगा अंग्रेजी से हमारे देश का कभी भला नहीं हो सकता आइए प्रयास करें कि हमारी सन्तानें टाई की संस्कृति छोड़ यज्ञोपवीत धारण करें और वैदिक शिक्षा के साथ संस्कृत व आधुनिक ज्ञान विज्ञान में भी आगे बढ़े और राष्ट्र को अपराध मुक्त करायें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज इसीलिए स्थापित किए थे जिससे संसार का परोपकार हो अंधविश्वास पाखण्ड दूर हो आज हमें अपनी संस्कृति व उन्नति के मूल वैदिक शिक्षा की ओर चलाना होगा।

अमृत–वाणी

भारतीय संस्कृति की शिक्षा

आचार्य सोमेन्द्र शास्त्री

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र कही जाने वाली ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की परंपरा आज भारतीय समाज में खोती जा रही है। सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के समान कहने वाली देवभूमि आज अस्तित्व को बचाने के विलखती नजर आ रही है।

ऋषि–मुनियों की देवभूमि–देवताओं की क्रीड़ा–स्थली रामायण की मार्यादा व महाभारत की धर्मरक्षा करने वाली भूमि आज देवत्व से आसुरी प्रकृतियां जागृत होने के कारण त्राहिमाम त्राहिमाम कर रही हैं। उन आसुरी वृत्तियों को समाप्त कर देवत्व की स्थापना करना परम आवश्यक हो गया है। विश्व की प्रथम ईकाई कही जानी वाली परिवार की प्रेम की डोर विखराव की तरुै हैं। आर्ष–मुनियों की देवभूमि पर परिवार में स्वर्ग की कामना को लेकर किये जाने वाले दैदिक कर्त्तव्य छूटते जा रहे हैं।

आज हम परिवार को भगवान का मन्दिर नहीं युद्ध का मैदान बना बैठे हैं। परिवार का प्रेम–त्याग, समर्पण आदर–मान सम्मान सब कुछ खत्म होता जा रहा है। जिस परिवार में आकर दिनभर की दौड़ धूप के बाद चैन की सांस लेता था, उसी के खुशी महौल में रहकर वह नई ऊर्जा, हम अपनी जड़ों से कट गये हैं परंपराओं से विमुक्त हो गये हैं हमें शास्त्रों के बनाये मार्ग पर ही चलकर परिवार में स्वर्ग की कामना प्राप्त हो सकती है।

स्वर्ग वही अन्य स्थान पर वसा देश नहीं है वह तो हमारे द्वारा बनाया गया वातावरण ही स्वर्ग व नरक हैं। जहां पर सज्जन पुरुष व जहां पर पुर्जन पुरुष रहते हैं वही पर स्वर्ग व नरक होता है। हमें अपने परिवारों को स्वर्ग के समान बनाना है परिवार में स्वर्ग स्थापित करना है तो सत्साहित्यका पठन–पाठन, संत–महात्माओं के सत्संग–प्रवचन करने चाहिए बड़ों से आशीर्वाद व छोटे व छोटे से प्रेम भरी बाते बराबर वालों के प्रति आदर सम्मान यह सब बातें परिवार में सात्विक भावनाएं पैदा करती हैं। जिससे परिवार में स्नेहमयी वातावरण बनकर साक्षात स्वर्ग का आभास कराता है।

वृक्ष का करूण क्रन्दन

– वेदप्रकाश शास्त्री

कितने प्यार से किसी ने, बरसों पहले बोया था मुझे।
कितना विशाल, कितना घना आज, मैं वृक्ष हो गया हूं।
फूलों–फलों से लदा हरा भरा, मैं वृक्ष हो गया हूं।।१।।
पर यदा कदा यह विचार मन में आता रहा।
क्या मैं भी दूसरे पेड़ों की तरह काटा जाऊंगा।
क्या मैं भी ऐसे ही वीरगति पाऊंगा।।२।।
दूषित हवा लेकर सभी से, स्वच्छ हवा देता रहा हूं।
इतना बड़ा उपकार सभी का, सदा ही मैं करता रहा हूँ।
जीवित रहकर ही ''नमन्ति सफला वृक्षाः'' सार्थक कर पाऊंगा।।३।।
कुछ तो दया करो, मत काटो मुझे, मत काटो मुझे।
यही मेरी करुणा भरी पुकार है, यही मेरी गुहार है।
मत काटो मुझे, मत काटो मुझे, मत काटो मुझे।।४।।
मानव की उत्साहपूर्ण घोषणा
करुण क्रन्दन सुन द्रवित हो, मानव बोला–सुनो हमारे गीत।
अब से कभी पोड़ नहीं कटेंगे, बन जायगी यह नई रीत।
वह दिन अब दूर नहीं, जब हर मानव वृक्ष बचाने आएगा।।५।।
जंगल अब नहीं घटने पाएगा, पेड़ न कोई अब कटने पाएगा।
हर मानव इक पेड़ लगाएगा, चैन की सांस तभी ले पाएगा।
पर्यावरण संतुलित तभी होगा, जनजागरण जब घर–घर हो जाएगा।।६।।
मेरा निश्चय है बस एक यही, पेड़ न कोई कटने पाए।
जनजीवन का है आधार वृक्ष, फिर इसका तन क्यों मुरझाए।
मेरी है हुंकार यही–कभी न यह कटने पाए,
प्रियवर कभी न यह कटने पाए।।७।।

सहृदयता

संकलन- आदित्य कुमार आर्य

एक थे सेठ रमणलाल। वे बड़े साधुस्वभाव के और भगवान् के परमभक्त थे। एक दिन भूलवश उनके रसोइये ने हलुवे में तो नमक का घोल डाल दिया और साग–सब्जियों में चीनी डाल दी। उसका कारण यह था कि रसोइया की पत्नी रुग्ण थी, उसकी परिचर्या में वह रात भर जागता रहा। अनिद्रा और चिन्तित मन होने के कारण उससे यह भूल हो गई।

सेठ जी भोजन करने बैठे तो उन्हें लगा कि हलुवा तो नमकीन और तरकारी मीठी, किन्तु बिना नमक की है। उन्होंने रसोइये के चेहरे की ओर देखा तो वह उन्हें उदास दिखाई दिया। सेठ ने उससे सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कहा–''महाराज! आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हो, क्या बात है?''

रसोइये का नाम लाभशंकर था। उसने कहा–'' ब्राह्मणी कुछ दिनों से बीमार चल रही है, इसी से चेहरे पर कुछ मलिनता आ गई होगी।''

रसोइये ने अपने रात भर जागते रहने की बात नहीं बताई। परन्तु पण्डित जी की उनींदी आंखें देख कर सेठ जी समझ गये। उन्होंने कहा––लाभशंकर! तुम खाना खाकर जल्दी घर जाओ। तुम्हारी पत्नी अकेली है, उसे जाकर संभालो। तुम्हारे घर में अन्य कोई है नहीं, भैया! तुमको तो आज आना ही नहीं चाहिए था। तुम को रात भर जागना भी पड़ा होगा। मैं एक आदमी भेज देता हूं, वह तुम्हारी पत्नी के पास बैठेगा, तुम कुछ घण्टे जाकर सो लेना। यहां कोई दूसरा आदमी काम कर लेगा।''

यह सुन कर रसोइये को सान्त्वना मिली। मन ही मन सेठ जी को आशीर्वाद देता हुआ वह घर चला गया।

रसोइये के चले जाने पर सेठ रमणलाल ने अपनी पत्नी चम्पाबाई से धीरे से कहा– ''देखो, बेचारा डर के मारे बीमार पत्नी को अकेला छोड़ कर काम पर आ गया। रात की नींद और ब्राह्मणी की चिन्ता। तभी उसने भूल से हलवे में नमक और तरकारी में चीनी डाल दी। यह सब खाना यदि घर के नौकर–चाकर खायेंगे तो ब्राह्मण की हंसी उड़ायेगे, इससे उसको बड़ा दुःख होगा।

''मेरे विचार से इस सारे भोजन को गोशाला में ले जाकर गायों को खिलवा दो। जल्दी से बार फिर हलवा पूरी बनवा लो, लाभशंकर की भूल का किसी को पता नहीं चलना ही ठीक रेगा।''

सेठ की साध्वी पत्नी ने वैसा ही किया। बात बहुत छोटी थी, किन्तु इस से सेठ रमणलाल को विशालहृदयता और सदाशयता का ज्ञान हो जाता है।

– प्रहसन

१. एक बार वेतन बांटते समय मुनीम ने एक नौकर को पचास रुपये कम दिये। इस पर नौकर ने मुनीम से कहा– 'मुनीम जी! आप मुझे पचास रुपये कम क्यों दे रहे हैं? मुनीम–'पिछले महीने तुम्हें गलती से पचास रुपये ज्यादा दे दिये गये थे, वह पचास रुपये इस बार काटे गये हैं। लेकिन एक बात तो बताओं–पिछली बार तो तुमने कोई शिकायत नहीं की थी, तो अब शिकायत क्यों कर रहे हो?'

नौकर–'वो ऐसा है कि एक बार गलती हो जाये तो वह माफ की जा सकती है लेकिन दुबारा गलती हो जाये तो उसकी शिकायत करनी ही पड़ती है।'

२. चश्मा विक्रेता अपने पुत्र को दुकानदारी समझा रहा था– 'देखो बेटा! अगर तुम्हारे पास कोई व्यक्ति वह वाला काला चश्मा (धूप का चश्मा) लेने आये और तुमसे उसके दाम पूछे तो कहना– पचास रुपये। लेकिन तुम ग्राहक के चेहरे को देखते रहो, यदि ग्राहक दाम सुनकर घबराये नहीं तो तुरन्त कहो–ये रुपये तो फ्रेम के हैं, अभी पचास रुपये शीशों के भी जोड़ने हैं। लेकिन इतना सुनकर भी ग्राहक घबराये नहीं तो तुरन्त कहो–ये तो एक शीशे के हैं, अभी पचास रुपये दूसरे शीशे के भी लगेंगे, इस प्रकार पूरा चश्मा डेढ़ सौ रुपये का है।'

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर – ७ का ४६ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १३,१४ एवं १५ अप्रैल २०१८ को आर्य समाज के प्रांगण में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दिनांक १२ अप्रैल २०१८ को एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी, इस अवसर पर आर्य जगत से सुप्रसिद्ध ख्यातिलब्ध विदुषी साध्वी डा० उत्तमा यती जी (अजमेर), आचार्य राम प्रसाद जी (कानपुर देहात), पं० संदीप वैदिक (मुजफ्फरपुर), पं० राम सेवक आर्य प्रज्ञाचक्षु (हमीरपुर) आदि अनेक उपदेशक, भजनोपदेशक, सन्यासी व वानप्रस्थी आदि उपस्थित थे।

उपदेशकों ने बताया कि आर्य जाति की उन्नति आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं स्वामी उदयानन्द के वेदोक्त विचारों से ही संभव है। पं० संदीप वैदिक जी एवं श्री रामसेवक जी के सुमधुर भजनों ने सभी जनसमूह को मन्त्रमुग्ध किया। इस अवसर पर १०० सत्यार्थ प्रकाश केवल मात्र ३० रूपया में उपलब्ध कराया गया। जिसको लेने वालों का उत्साह देखते ही बनता था। इस अवसर पर दिनांक कराया गया। जिसको लेने वालों का उत्साह देखते ही बनता था। इस अवसर पर दिनांक १५.४.२०१८ को ऋषि लंगर का आयोजित किया गया जिसको पाकर सभी तृप्त हुए।

श्री कृष्ण आर्ष गुरूकुल देवालय गोमत (अलीगढ़)का

10वाँ वार्षिकोत्सव एवं सामवेद पारायण महायज्ञ

दिनांक 11 मई 2018 से 13 मई 2018 रविवार तक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं, दर्शन देकर कृतार्थ करें।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	महात्मा श्रद्धानन्द सरस्वती	चौ० मामचन्द्र तंवर
संस्थापक एवं संचालक	आचार्य	प्रधान
कैप्टन रुद्रसैन	स्वामी विचारमुनि	सुनिलकुमार शास्त्री
मंत्री	संरक्षक	प्रबन्धक

सम्पर्क सूत्र- 9416267482, 9671503782, 9467942142, 9813507656

शोक संवेदना

आर्य समाज के निवर्तमान मन्त्री श्री राजकुमार ग्रोवर जी के अकस्मिक निधन से आर्य सामज बदायुं में शोक की लहर छा गयी दिनांक ०३.०४.२०१८ को अचानक हृदय गति रूक जाने के कारण राजकुमार ग्रोवर जी का निधन हो गया, ग्रोवर जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकताओं में से एक थे आर्य सामज के प्रचार प्रसार में सर्वदा आगे बढ़कर भाग लेते थे।

राजकुमार ग्रोवर जी का निधन आर्य समाज बदायूँ की अपूरर्णीय क्षति है। आपका स्नेह सभी आर्य जनों को स्मरण आता रहेगा। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा शान्ति प्रदान करें।

और परिवारीजनों को यह असहनीय दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

– हरिओम आर्य

निर्वाचन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मिर्जापुर

1. श्री आद्या प्रसाद सिंह-प्रधान 2. अमरनाथ सिंह-मंत्री 3. झग्गड़ सिंह आर्य-कोषाध्यक्ष

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

आर्यकन्या गुरूकुल शिवगंज का विंशतितम भव्य वार्षिकोत्सव एवं तृतीय समावर्त्तन दीक्षा समारोह

ज्येष्ठ कृ. नवमी, दशमी, एकादशी, वि.सं. 2075
शुक्र, शनि, रवि, 8, 9, 10 जून को सम्पन्न होगा।

निवेदक
आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा, शिवगंज (प्राचार्य)
सरोजनी देवी, कलोल (अध्यक्षा) अरूणा नागर, सुमेरपुर (मंत्री)
आचार्या धारणा याज्ञिकी, शिवगंज (उपमंत्री)
कार्यक्रम स्थल : आर्य कन्या गुरूकुल, शिवगंज, जिला-सरोही
सम्पर्क – 02976-270629, 09680674789

10 दिवसीय विशाल युवा चरित्र निर्माण आत्म रक्षा, व्यक्तित्व विकास योग एवं व्यायाम प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर श्रेणी से शारवा नायक स्तर तक

उद्देश्य युवावों को वैदिक धर्म एवं राष्ट्रीयता से संस्कारित करते हुए चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण देना।

दिनांक 23 मई से 1 जून 2018 तक

स्थान– श्री गायत्री विद्या मन्दिर इण्टर कालेज भरुआ सुमेरपुर जि0 हमीरपुर, उ0प्र0

डॉ0 स्वामी देवव्रत सरस्वती
प्रधान संचालक– सा0 आर्य वीर दल, दिल्ली
शिविराध्यक्ष

स्वामी स्वदेश जी महाराज
कुलपति– गुरूकुल विवि. वृन्दावन, मथुरा
शिविर संचालक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0
शिविर संचालक

पृष्ठ १ का शेष

वैदिक धर्म ...

अगर तुम संसार का भला चाहते हो एक ईश्वर, एक धर्म, एक ग्रंथ, एक अभिवादन मानकर वेद ज्ञान का प्रचार करो। बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है उन स्वार्थी, दम्भी लोगों ने स्वामी जी की सलाह नहीं मानी। स्वार्थी पाखण्डी लोगों ने उन पर गोबर फेंका, पत्थर बरसाए और उन्हें सत्रह बार विष पान कराया। किन्तु वे अपने धर्म पथ से विचलित नहीं हुए। अगर स्वामी दयानन्द जो इस धरती पर नहीं आते तो आज कोई वेद शास्त्रों की चर्चा करने वाला, राम, कृष्ण आदि महापुरुषों और ऋषियों मुनियों का नाम लेने वाला दुनिया में नजर नहीं आता। वास्तव में उन जैसा त्यागी–तपस्वी, वीर, साहसी, ईश्वर विश्वासी, वेदों का विद्वान् महाभारत काल के बाद कोई दूसरा व्यक्ति इस संसार में नहीं हुआ। वे वस्तुतः सच्चे युगनायक संन्यासी थे। उनका ऋण हम कभी नहीं चुका सकते।

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि महर्षि दयानन्द जी ने हमारे भले के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया था। किन्तु हम उनकी शिक्षाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं। महर्षि ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन पंच यज्ञ करने की शिक्षा दी थी। किन्तु हम पंच यज्ञों का करना–कराना भूल चुके हैं। अब तो यह स्थिति आ गई है कि आर्य समाज के भवनों में संन्यासी, विद्वानों, उपदेशकों को भी नहीं ठहरने दिया जाता। शहरों में आर्य समाज के भवनों में बरात घर बना दिए गए हैं और बनाए जा रहे हैं। बारात में आए दिन बारातियों द्वारा हुड़दंग मचाने एवं शराबबाजी करने की खबरें समाचार पत्रों में छपती रहती हैं। महर्षि दयानन्द ने कर्मवास के राजा राव को रासलीला के नाम पर महापुरुषों का स्वांग भरने पर फटकार लगाई थी किन्तु आज आर्य समाज के उत्सवों में बाल–बालिकाओं को महापुरुषों का स्वांग भरने की खुली छूट दी जाने लगी है जो शर्म की बात है। स्वामी जी ने सह शिक्षा को घातक बताया था किन्तु अब आर्य समाज के विद्यालयों में सहशिक्षा दी जाती है। आर्य समाजों के पदाधिकारी कई स्थानों पर शराबी, मांसाहारी, बेईमान व्यक्ति बने हुए हैं जिन्हें वैदिक सिद्धान्तों को कोई ज्ञान नहीं है। आर्य समाजों और सभाओं में पदों और सम्पत्तियों के ऊपर मुकदमें बाजी हो रही है जिससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा मिट रही है। यह हमारे लिए शर्म की बात है।

इस समय संसार में हजारों व्यक्ति वेद विरूद्ध मत–मतांतर चलाकर, ईश्वर की पूजा छुड़वाकर गुरुडम एवं पाखण्ड फैला रहे हैं। जिनमें से सैकड़ों पाखण्डी जेलों में बन्द हैं। इस समय चरित्र हीनता, भ्रष्टाचार बढ़ रहे हैं। जिससे सारा संसार दुखी है। अगर महर्षि दयानन्द को यह ज्ञात होता कि हम इतने स्वार्थी प्रमादी लोभी बन जायेंगे तो वे कदापि विषपान नहीं करते। पं० लेखराम ने कहा था लेखनी का कार्य और शास्त्रार्थ बंद नहीं होने चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था शुद्धि का कार्य कभी भी बंद नहीं होना चाहिए। आप ठण्डे दिल से विचार करें कि क्या उनकी बात मान रहे हैं? जो अपने आगे किसी को भी कुछ नहीं समझते। याद रखो, यह धन यहीं पड़ा रह जाएगा। इस संसार में जो व्यक्ति निःस्वार्थ भावना से परोपकार एवं संसार की भलाई के करते हैं यह संसार उन्हीं की महिमा के गीत गाता है। अगर आप भी महान् बनना चाहते हैं और महर्षि दयानन्द महाराज के सच्चे शिष्य बनने का दम भरते हैं तो वेद प्रचार तन, मन, धन से पूरी लगन के साथ वेद प्रचार करें। तभी हम महर्षि देव दयानन्द के सपनों को साकार कर सकते हैं।

गुरूकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन वैदिक आर्ष–परम्परा के संवाहक गुरूकुल प्रभात आश्रम, मेरठ, उत्तर प्रदेश में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश–परीक्षा पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी २६ जून से ३० जून २०१८ तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र अर्हता पंचम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं आयु १० वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही (प्रातः ८.००–११.०० तथा सायं २.००–५.०० बजे तक) होगी। लिखित परीक्षा में ६० प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र ही मौखिक परीक्षा के लिए चुना जायेगा।

विशेष जानकारी के लिए आचार्य, गुरूकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ से सम्पर्क करें।

दूरभाष संख्या– 0800672551, 09711325677
सूचना– अभिभावक समय का विशेष रूप से ध्यान दें।
निवेदक– प्रबन्धक, गुरूकुल प्रभात आश्रम,
टीकरी, भोला–झाल, मेरठ– 250501 (उ0प्र0)

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ-गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ (उ0प्र0) में प्रवेश प्रारम्भ

गंगा किनारे गढ़मुक्तेश्वर के निकट गुरूकुल म०वि० पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हैं। यहाँ शान्त वातावरण है। उ०प्र० मा०सं० शि० परिषद् लखनऊ द्वारा माध्यमिक एवं सं० सं० वि० वि० वाराणसी से आचार्य तक मान्यता प्राप्त है आदर्श गौशाला का शुद्ध दूध एवं योग्य शिक्षकों द्वारा कड़ा अनुशासन पढ़ाई की सुन्दर व्यवस्था है।

धनुर्विद्या सिखाने की व्यवस्था है आर्य वीर दल की शाखा द्वारा व्यायाम प्रशिक्षण केन्द्र के साथ–साथ संस्कार प्रशिक्षण की भी सुन्दर व्यवस्था है। प्रवेश परीक्षण के बाद ही प्रवेश होगा नियमावली मंगाकर शीघ्रता करें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	आचार्य राजीव	आचार्य दिनेश	अखिलानन्द
संचालक	प्राचार्य	व्यवस्थापक	अधिष्ठाता
६८३७४०२१६२	६४१०६३८४४४	६४११०२६७७५	

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।